ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-3* April- 2020
Innovation The Research Concept

गोदान की 'धनिया' भारतीय कृषक महिला के विद्रोह की दास्तान

Godan's 'Dhaniya' Story of Rebellion of Indian Farmer Woman

शम्भु लाल मीना
सह आचार्य,
हिन्दी विभाग,
राजकीय कला महाविद्यालय,
दौसा, राजस्थाान, भारत

Paper Submission: 05/04/2020
Date of Acceptance: 23/04/2020
Date of Publication: 30/04/2020

सारांश

प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में भारतीय किसानों की दयनीय हालत का चित्रण किया है। अपने प्रसिद्ध उपन्यास गोदान में भारतीय ग्राम्य जीवन में किसान और जमींदारी प्रथा के अन्तर्विरोधों को रेखांकित किया है। गोदान की नायिका 'धनिया' भारतीय निम्न मध्यमवर्गीय ग्रामीण किसान की महिलाओं का जीवंत दस्तावेज है। भारतीय किसान कठिन परिश्रमी होते हुए भी जमींदारी प्रथा की गुलामी करने को विवश है। जमींदार, पटवारी, कारिन्दों के शोषण से किसानों को आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। गोदान की 'धनिया' जमींदारी प्रथा का विरोध करती है और अपने पति को भी इसके लिए तैयार करती है। पति का पूरा साथ न मिलने पर खुद ही जमींदारों, समाज के पंच पटेलों, पटवारी, कारिन्दों को खरी–खरी सुनाने हेतु विवश होती है।

एक ममतामयी माँ होने के कारण अपने परिवार का तंग आर्थिक हालत में भी पालन–पोषण करते हुए अपने पुत्र गोबर की गर्भवती प्रेयसी को घर में शरण देती है और जाति–बिरादरी, पंच–पटेलों के कुचक्र का सामना करती है। होरी द्वारा सामाजिक दण्ड की हामी भरने पर उसका विरोध करती है। पंडित मातादीन द्वारा सिलिया चमारिन को घर से निकालने पर उसे शरण देती है। अनपढ़, अशिक्षित होते हुए भी उसकी समझ और खरी–खरी सुनाने की आदत के कारण हर कोई उससे भयभीत रहता है। वह हृदय से जिस बात को सही मानती है उस पर अडिग रहती है। अभावग्रस्त ग्रामीण किसान की पत्नी होते हुए वह अपने पति का अंत समय तक कंधे से कंधा मिलाकर साथ देती है। अपनी मेहनत से सूतली बेचकर बीस आने अपने पति के हाथ में रखकर 'गोदान' करती है। धनिया के बिना गोदान उपन्यास पूर्णता को प्राप्त नहीं होता ।

Premchand has depicted the pitiable condition of Indian farmers in his novels. In his famous novel, Shgodanash, Indian village life has underlined the contradictions of the peasant and zamindari system. Godan's heroine Dhaniy is a living document of women of Indian lower middle class rural farmer. The Indian farmer, despite being hard-working, is forced to slavery to Zamindari system. Farmers have to face economic troubles due to exploitation of landlords, patwari, karinds. Godan's Dhaniya opposes the zamindari system and prepares her husband for it as well. On not getting full support of her husband, she herself is forced to listen to the landlords, the Panch Patels, Patwari, Karinds of the society. Being a Mamatamayi mother, she also takes care of her son Gobar's pregnant lover at home and takes care of the vicious cycle of the caste-fraternity, Panch-Patels, while also raising her family in a tight financial condition. She opposes the social punishment being accepted by Hori. She shelters Cilia Chamarin when Pandit Matadin expels her. Despite being illiterate, uneducated, everyone is afraid of her because of her understanding and habit of telling it properly. She stays true to what she believes to be right from the heart. Being the wife of a depressed rural farmer, she accompanies her husband shoulder to shoulder till the end. With her hard work, she sells 'twine' and put 20 Pennies in her husband's hand for 'Godan'. Without Dhaniya Godan novel would not have attained perfection.

मुख्य शब्द : गोदान, आदर्शोन्मुख, सूद, कुड़की, चंगुल, नजराना, रांड, दारोगा, अक्षुण्ण, बछिया।

Keywords: Godan, Ideal Oriented, Interest, Kurki, Clutches, Sight, Widow, Inspector, Intact, Heifer.

प्रस्तावना

प्रेमचन्द की सर्वोत्कृष्ट कृति गोदान उपन्यास मानी जाती है। इस उपन्यास के माध्यम से प्रेमचन्द ने भारतीय कृषक जीवन की समस्याओं का व्यापक रूप से चित्रण किया है। प्रेमचन्द ने किसानों के जीवन की समस्याओं को ग्रामीण जीवन में साक्षात् देखा था। गोदान उपन्यास की नायिका 'धनिया' अपने पति होरी का जीवन भर कंधे से कंधा मिलाकर साथ देती है। उपन्यास में प्रारम्भ से अंत तक छायी रहती है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को अपनाया है। गोदान की 'धनिया' भारतीय कृषक जीवन की महिलाओं के यथार्थ जीवन का दस्तावेज है जो उनकी मान्यताओं, आस्थाओं, रूढ़ियों से हमें रूबरू कराता है।

भारतीय किसान आजादी से पूर्व जमींदारी व्यवस्था के कुचक्र में पिसता था। जमीन का समय पर लगान नहीं देने पर कारिन्दों, पटवारियों के कुचक्र का सामना करना पड़ता था। महाजनों से रूपये उधार लेकर किसान अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता था। महाजनों के कर्ज से उसे आजीवन छुटकारा नहीं मिलता था। किसान काफी मेहनत करता था किन्तु महाजन उसकी अज्ञानता का फायदा उठाकर सूद पर सूद वसूलता जाता था। इसलिए वह कभी महाजन के चंगुल से छुटकारा नहीं पा सकता था।

गोदान उपन्याय के प्रारम्भ में हम देखते हैं कि होरी जमींदार रायसाहब से मिलकर अपनी फसल को कुड़की होने से बचाने के लिए खुशामद करते हैं। धनिया को अपने पति की चापलूसी पसंद नहीं है। वह भारतीय महिला के अनुरूप अपने पति से प्रेमवश पहले जलपान का आग्रह करती है –'इसी से तो कहती हूँ कुछ जल–पान कर लो। और आज न जाओगे तो कौन हरज होगा। अभी तो परसों गये थे।' [1]

'धनिया' भारतीय कृषक महिला के समान इतनी व्यवहार–कुशल न थी। उसका विचार था कि जमींदार के खेत जोतते हैं तो वह अपना लगान ही लेगा। हम उसके तलवें क्यों सहलाएँ ? धनिया ने अपने वैवाहिक जीवन के बीस वर्षों में यह अनुभव किया था कि कितना ही पेट–तन काटों जमींदार के लगान को चुकाना मुश्किल है। छत्तीस वर्ष की उम्र में ही धनिया के बाल पक गये थे, चेहरे पर झुरियाँ पड़ गई थी और आँखों से कम दिखने लगा था। इन परिस्थितियों के मध्य उसका मन इस जमींदारी प्रथा का विरोध करता है किन्तु उससे छुटकारा मिलना आसान नहीं है। उसकी विपन्नता में पति का ही एक मात्र सहारा है। धनिया जमींदारों को खरी–खोटी सुनाती है– 'ये हत्यारे गाँव के मुखिया है, गरीबों का खून चूसने वाले, सूद ब्याज, डेडी–सवाई, नजर–नजराना, घूस–घास जैसे भी हो, गरीबों को लूटो।'[2]

होरी भारतीय किसान के समान गाय रखने की इच्छा रखता है। वह भोला महतो से उधार में गाय लाकर गृहस्थी को चलाने का प्रयास करता है।'धनिया' ग्रामीण मान्यता के अनुरूप नजर से बचाने के लिए गाय के गले में घंटी बाँधती है। ग्रामीण परिवेश में पडौस में कोई गाय–बैल खरीदकर लाता है तो सब उसे देखने आते हैं। इससे उनका आत्मीय भाव प्रकट होता है। धनिया के घर भी गांव के लोग गाय को देखने आते हैं किन्तु उसके दोनों देवर हीरा और शोभा ईर्ष्यावश गाय को देखने नहीं आते हैं। इससे धनियॉ उनकी मनोवृत्ति समझ जाती है। होरी अपने भातृत्व प्रेम के कारण अपनी पुत्री रूपा को रात्रि में भाईयों को बुलाने भेजता है। धनिया अपने वात्सल्य के कारण पुत्री के भेजने पर होरी को फटकारती हुई कहती है –'मैंने तुमसे हजार बार कह दिया, मेरे लड़कों को किसी के घर न भेजा करो। किसी ने कुछ कर करा दिया तो मैं तूम्हें लेकर चाटूँगी ? ऐसा ही बड़ा परेम है तो आप क्यों नहीं जाते ? अभी पेट नहीं भरा जान पड़ता है।'[3]

होरी इधर धनिया की फटकार और उधर भाईयों (हीरा और शोभा) की कानाफूंसी कि होरी ने अलगोझे में पैसे की बेईमानी कर गाय खरीदी है, उसे गाय को लौटाने को बाध्य करती है। धनिया अपने देवरों व पति से डरने वाली नहीं है और वह कहती है यदि गाय घर से निकल गई तो अनर्थ हो जायेगा। धनिया अपने परिवार की खुशहाली के लिए किसी से भी टक्कर लेने को तैयार हो जाती है। होरी गाय के कारण गृह कलह को ठीक नहीं मानता है।

कुछ समय पश्चात् गाय की मृत्यु हो जाती है। होरी अपने मन की बात धनिया को बताता है कि यह काम हीरा ही कर सकता है, मैंने उसे यहाँ बैठे देखा था। होरी अपने भाई को बचाना चाहता है किन्तु धनिया अपने देवर को इस कृत्य के लिए माफ नहीं करना चाहती। वह कहती है –'कौन सवेरा होते ही लाला को थाने न पहुँचाऊँ तो अपने बाप की बेटी नहीं। हत्यारा भाई कहने जोग है। यह भाई का काम है। वह बैरी है, पक्का बैरी, और बैरी को मारने में पाप नहीं छोड़ने में पाप हैं।' प्रातः धनिया थाने में रपट दर्ज करवाती है।होरी गांव के मुखिया के सामने के सिर पर हाथ रखकर झूंठी कसम खा कर अपने भाई को बचाने का प्रयास करता है। धनिया होरी को भी फटकारती है–'भाईयों के सामने भीगी बिल्ली बन जाता है, पापी कहीं का हत्यारा ।'[4] आगे कहती है –'धूड़ी है। अगर मेरे बेटे का बाल भी बांका हुआ तो घर में आग लगा दूँगी। भगवान आदमी मुँह से बात कहकर इतनी बेसरमी से मुकर जाता है।'[5] वह अपने पुत्र के बल पर हीरा को धक्का देकर गिरा देती है। वह होरी से कहती है कि घर के आदमी लत्ते कपड़े को तरसे और आप दरागों को तीस रूपयों की रिश्वत देकर केस को रफा–दफा करवाना चाहते हैं। होरी अपने घर–परिवार की इज्जत का रोना रोता है। वह कहती है' ये रूपये कहाँ लिये जा रहा है, बता ? भला चाहता है , तो सब रूपये लौटा दे, नहीं कहे देती हूँ। ऐसी बड़ी है तेरी इज्जत । जिसके घर में चूहे लोटें, वह भी इज्जत वाला है। दरोगा तलासी ही तो लेगा। ले–ले जहाँ चाहे तलासी। एक तो सौ रूपये की गाय गयी, उस पर यह पलेथन । वाह री तेरी इज्जत ।'[6]

दरोगा धनिया को फंसाने के लिए गाय को मारने का आरोप उस पर लगाता है। धनिया इसकी परवाह नहीं करती है। होरी के ज्वर होने पर धनिया को दुःख होता है और वह उसके ईलाज के लिए चिंतित होती है–'पति जब मर रहा है तो उससे कैसा बैर ? ऐसी दशा

में तो बैरियों से भी बैर नहीं होता, वह तो अपना पति है।'[7]

धनिया का बेटा गोबर झुनिया के प्रेम प्रसंग में उलझकर गर्भवती होने पर घर छोड़कर स्वयं परदेश चला जाता है। जाति – बिरादरी के लोग उसे अलग कर कुएं पर पानी भरने से रोकते हैं। धनिया गरज कर कहती है –'किसी ने उसे पानी भरने से रोका, तो उसका और अपना खून एक कर देगी ।'[8] कहने का भाव यह है कि धनिया जाति–बिरादरी के अनुचित निर्णय का पूरी दृढ़ता से विरोध करती है। झुनिया के रात में घर आने से धनिया को भी बहुत बुरा लगता है। वह कहती है–झुनिया इस घर में आये, तो मुँह, जुलस दूँ रांडका।' [9]

किन्तु उसका मातृत्व उसे ऐसा करने नहीं देता है। उसका वात्सल्य इतना विराट है कि संसार के सारे कलंक सारी बाधाएं सहन करने को तैयार हो जाती है। उसका यही वात्सल्य झुनिया के लिए अपने घर के दरवाजे खोलने के लिए विवश कर देता है। वह होरी से कहती है कि देखो, मेरी सौंह उस पर हाथ न उठाना। वह तो आप ही रो रही है। भाग की खोटी न होती तो यह दिन ही क्यों आता। अपने वात्सल्य के कारण जाति–बिरादरी और समाज से लड़ने को तैयार हो जाती है। धनिया स्वयं वीर है और अपने पुत्र की कायरता पर उसे हार्दिक खेद होता है। अपने पोते के जन्मोत्सव पर वह कहती है अगर बिरादरी को उसकी परवाह नहीं है तो वह भी बिरादरी की परवाह नहीं करती है।'[10]

गाँव के पंच पटेल पटेश्वरी, पं0 नोखेराम, झिंगुरी सिंह ने मिलकर सर्वसम्मति से एक सौ रूपये तीस मन अनाज का दण्ड लगा देते हैं। धनिया भरी सभा में रूंधे कंठ से विरोध करती है–'पंचों, गरीब को सताकर सुख न पाओगे, इतना समझ लेना। हम तो मिट जाँयेंगे, कौन जाने, इस गांव में रहे या न रहें, लेकिन मेरा सराप तुमको भी जरूर से जरूर लगेगा।' होरी पंच परमेश्वर मानकर पंचायत का फैसला स्वीकार कर लेता है किन्तु धनिया कहती है –'मैं एक दाना न अनाज दूँगी, न कौडी डांड। जिसमें बूता हो चलकर मुझसे ले। अच्छी दिल्लगी हैं। सोचा होगा, डाँड के बहाने इसकी सब जैजात ले लो और नजराना लेकर दूसरे को दे दो।' [12]

धनिया के मना करने पर भी होरी जाति बिरादरी के भय से सारा खलिहान खाली कर देता है और सोचता है पंचायत को दया आयेगी तो कुछ अनाज परिवार को वापिस दे देगी धनिया कहती है –'यह पंच नहीं राछस हैं, पक्के राछस ! यह सब हमारी जमीन छीन कर माल मारना चाहते हैं।'[13]

होरी के खलिहान खाली करने पर थोड़ा अनाज बचता है तो धनिया होरी का हाथ पकड़कर कहती है– मैंने अपनी बच्चियों के साथ दिन रात मेहनत की है क्या उनको भूखा मारोगें ? होरी धनिया के आगे हार स्वीकार कर लेता है। वह धनिया को बिना बताये 20 रूपये नकद देकर अस्सी आने में धर गिरवी रख देता है।

धनिया को यह भी बुरा लगता है। वह कहती है कि कौन सा पाप किया है, जिसके लिए बिरादरी से डरें ? किसी की चोरी की है, किसी का माल काटा है, मेहरिया रख लेना पाप नहीं है, हाँ रख के छोड़ देना पाप है। आदमी का बहुत सीधा होना भी बुरा है। उसके सीधेपन का फल यही होता है कि कुत्ते भी मुँह चाटने लगते हैं।'[14]

झुनिया के पिता भोला महतो जब झुनिया से वापस घर लौटने की बात कहते हैं तो धनिया उसका प्रतिकार करती हुई जवाब देती है–'तो मेरी भी सुन लों, जो बात तुम चाहते हो वह न होगी, सौ जनम न होगी, झुनिया हमारी जान के साथ है। उसने झुनिया को जितनें प्रेम से रखा, सम्भवतः माँ भी न रखती ।' [15]

होरी के भोलेपन के कारण ही भोला महतो गाय के पैसे नहीं चुकाने के कारण बैलों की जोड़ी खोल ले जाता है, धनिया झुनिया को घर से निकालने की बजाय बैलों की जोड़ी जाने से ही संतोष करती है। होरी के बैल नहीं रहने पर दातादीन आधे बांटे पर खेती करता है, होरी को खाने लायक अनाज भी दे देता है। खेती तैयार होने पर होरी का हिस्सा उधारी चुकाने में चला जाता है। धनिया को बहुत दुःख होता है कि सारी मेहनत तो हम करें और हमें मजदूरी, खाने–पहनने व कपड़े भी मयस्सर नहीं होते हैं।

घर की विपन्न हालत में भी परदेश से अपने बेटे गोबर के आने पर उसे हार्दिक प्रसन्नता होती है और आत्मिक शांति मिलती है। प्रेमचन्द ने गोदान में लिखा है–'धनिया ने उसे आशीर्वाद दिया और उसका सिर अपनी छाती से लगाकर मानो अपने मातृत्व का पुरस्कार पा गयी। उसका हृदय गर्व से उमड़ा पड़ता था। आज तो रानी है। इस फटे हाल में भी रानी है।' [16] माता बेटे को पास में देखकर संसार का सारा ऐश्वर्य पा जाती है। वह बेटे से कहती है कि बेटे कम से कम चिट्ठी–पत्री तो भेज देते । मैं तुम्हारे बारे में बहुत चिंता करती थी। गोबर जब झुनिया को परदेश ले जाना चाहता है तो धनिया की चिंता बढ़ जाती है। वह सोचती है परदेश में झुनिया घर व बच्चे को कैसे संभाल पायेगी ? बेटे की जिद के कारण वह चुप हो जाती है। बेटे को रोटी–पानी की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। जब धनिया अपने बेटे गोबर की स्वार्थी बाते सुनती है तो उसके हृदय को चोट पहुँचती है। गोबर कहता है –'यह तो स्वारथ का संसार है। जिसके साथ चार पैसे गम खाओ, वही अपना। खाली हाथ तो माँ बाप भी नहीं पूछते।' [17] वह अपने बेटे से कहतीं है कि मैंने भी तेरे को पाल–पोस कर बड़ा किया था। गोबर माँ की बातों को ज्यादा महत्त्व न देकर प्रत्युत्तर में कहता है –'पालने में तुम्हारा क्या लगा ? जब तक बच्चा था दूध पिला दिया। फिर लावारिस की तरह छोड़ दिया। जो सबने खाया, वहीं मैंने खाया।'[18] धनिया सोचती है कि झुनिया ने ही बेटे को मेरे खिलाफ भड़काया है, पहले गोबर माँ के सामने जवाब नहीं देता था।

धनिया अपने बेटे को समझाती हुई कहती है कि बेटे चार पैसे कमाने लगे कि माँ–बाप से आँखे फेर लेते हैं। माँ–बाप अपनी संतान के पालन–पोषण के लिए कर्ज लेते हैं। गोबर अब घरेलू कर्ज चुकाने की बजाय अपने परिवार की चिंता करता है। कुछ समय पश्चात् धनिया अपनी पुत्री सोना की शादी करती है। घर की खस्ताहालत है और होरी के कहने पर भी अपने बेटे गोबर से पैसे के लिए नहीं कहती है। प्रेमचन्द ने धनिया को

स्वाभिमानी माँ के रूप में चित्रित किया है। एक माँ अपने बेटे के लिए सर्वस्व त्याग कर सकती है लेकिन प्रतिदान में उससे कुछ नहीं माँगती है। डॉ0 माधुरी दूबे ने अपनी पुस्तक –हिन्दी साहित्य के कुछ नारी पात्र' की भूमिका में लिखा है –' वह ममत्व से पूर्ण माँ और प्रेममय पत्नी ही नहीं वरन् विचारों से , छल, कपट और अन्याय से टक्कर लेने वाली अपनी स्वतंत्र मान्यताओं पर चलने वाली मुक्त नारी भी है।'[19]

प्रकृति ने नारी को पुरूष के पूरक के रूप में बनाया है। गोदान की धनिया पर यह बात पूर्णतः लागू होती है। वह जीवन भर पति का कंधे से कंधा मिलाकर साथ देती है। वह समाज की सड़ी गली मान्यताओं का पुरजोर विरोध करती है। वह जमींदारी प्रथा का विरोध करती है। उसके तीन बच्चे दवा–दारू के अभाव में असमय ही काल कलवित हो गये। धनिया के चरित्र में भावना और बुद्धि , दृढ़ता और कोमलता का सुन्दर समन्वय है। वह तनिक प्रशंसा में रीझने वाली सरल हृदया है। घर आये भोला के मुख से तनिक प्रशंसा सुनकर उसके मुख पर स्निग्धता झलकने लगती है। वह गोबर और होरी को भूसा लेकर उसके घर पहुँचाने को बाध्य करती है।

होरी से धनिया का सिद्धान्त संबंधी कितना ही विरोध हो, वह उसे प्यार करती हैं। क्रोध में भी उसका बुरा नहीं चाहती । उसके खाने–पीने , विश्राम करने के ध्यान के साथ उसे इस बात का भी ध्यान रहता है कि समाज में होरी के साथ कोई मुसीबत खड़ी न हो जाए। होरी जब धनिया को मार–पीटकर उसका अपमान करता है तो उससे लड़ने पर उतारू हो जाती है। डॉ0 माधुरी दूबे ने कहा है 'यह लड़ाई धनिया की होरी से लड़ाई नहीं, लेकिन सदियों से पुरूषों द्वारा दलित नारी की लड़ाई हैं, जो अब बिना बात पुरूषों की मार फटकार सहने को तैयार नहीं। धनिया की यह लड़ाई नारी जाति के प्रति पुरूष की अशिष्टता, अन्याय, अपमान तथा उत्पीड़न और समाज में फैली असत्यता के प्रति है। [20]

इतना सब कुछ होते हुए भी होरी द्वारा दारोगा को रिश्वत देने का विरोध करती है। धनिया अन्याय का विरोध करती है लेकिन उसका मन दर्पण सा स्वच्छ है। दैन्यपूर्ण स्थिति में वह अपराधी को क्षमा कर देती है। असहाय पुनिया की खेती में वह सहायता करती है। धनिया अन्याय के सामने कभी घूटने नहीं टेकती है। कुल मर्यादा की रक्षा के लिए वह सोना के विवाह में नोहरी से रूपये उधार लेती हैं। धनिया पति की मारकाट को भूलकर उसकी सेवा करती है। वह कहती है–'पति जब मर रहा है तो उससे कैसा बैर। ऐसी दशा में तो बैरियों से भी बैर नहीं रहता, वह तो उसका पति है। लाख बुरा है पर उसी के साथ जीवन के पच्चीस साल काटे है, सुख किया है तो उसी के साथ। अब तो चाहे अच्छा है या बुरा , अपना है।

होरी की जब हालत दिनों दिन गिरती जाती है। ठीक से वह भोजन नहीं कर पाता है तो धनिया घबरा जाती है। पतिव्रता धनिया का होरी ही एक मात्र आधार है। उस सत्य की देवी की तरफ किसी की आँख उठाने की हिम्मत नहीं हुई थी। धनिया की जुबान तेज है पर उसका हृदय फूल सा कोमल है। वह उन भारतीय नारियों में से है जो सतीत्व की रक्षा करती है। अपने अदम्य साहस को अक्षुण्ण बनाये रखती है। मुसीबतों में घबराकर भी असत्य से लड़ना नहीं छोड़ती है और न सत्य का पक्ष त्यागती हैं। दीन–दुखियों की सहायक और अन्यायियों की विरोधिनी थी।

ऐसी संघर्षमयी धनिया का जब होरी साथ छोड़ देता है तो वह जड़वत हो जाती है। प्रेमचन्द ने गोदान में लिखा है– सब कुछ समझकर भी धनिया मिटती हुई छाया को पकड़े हुए थी। आँखों से आँसू गिर रहे थे, मगर यंत्र की भांति दौड़–दौड़कर आम भुनकर पना बनाती, कभी होरी की देह में गेहूँ की भूसी की मालिस करती।' [21]

क्या करती जीवन भर मेहनत करने के बावजूद डॉक्टर को बुलाने के पैसे नहीं थे। उसकी गाय मारने वाला देवर हीरा कह रहा था ' भाभी दिल कड़ा करो गोदान करा दो। धनिया उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखती हैं और यंत्र की भाँति उठकर सूतली बेचकर बीस आने पैसे जो उसे मिल थे पति के ठण्डे हाथ पर रख दिये। पं0 दातादीन से कहती है कि महाराज घर में न गाय है, न बछिया न पैसा। यही पैसे हैं, यही इसका गोदान है और पछाड़ खाकर गिर पड़ी।'[22]

धनिया जैसी नारी ने समाज की कितनी सड़ी गली परम्पराओं को ठोकर लगाई थी, किन्तु जीवन–साथी के अभाव में असहाय सी हो गई थी। विधि के विधान के आगे उसका वश नहीं चला। धनिया अपनी सम्पूर्ण निष्ठा, त्याग, परिश्रम और संघर्ष के उपरांत भी वह अपने पति को समाज के प्रहारों से न बचा पाई।

समाज की बुराइयों को दूर करने में धनिया ने अपने पति को भी प्रेरित किया है। वह अपने उद्देश्य में चाहे पूरी तरह सफल नहीं हुई हो, लेकिन उसने ऐसी चिनगारी छोड़ी है जो आगे जन–जीवन को प्रभावित करेगी। वह ऐसी जीवन संगिनी है जो मरते दम तक अपने पति का साथ देती है।

निष्कर्ष

धनिया अपने जीवन में सभी प्रकार के कष्ट सहन करती हुई भारतीय कृषक महिला के समान अपनी मर्यादाओं के पालन का ध्यान रखती है। वह निराश्रित महिलाओं के प्रति सहृदयी है। वह झुनिया और सिलिया को संकट के समय अपने घर में शरण देती है चाहे समाज की यंत्रणाओं का सामना करना पड़े। अपनी दयनीय स्थिति के बावजूद सोना की शादी में उधार लेकर भी दान–दहेज की व्यवस्था करती है। निम्न मध्यवर्गीय कृषक परिवार की महिला सामाजिक मर्यादाओं का ध्यान रखती है।

अंत टिपणी

1. *गोदान – प्रेमचन्द पृ0 07*
2. *वहीं– पृ0 114*
3. *वहीं– पृ0 49–50*
4. *वहीं– पृ0 93*
5. *वहीं– पृ0 138–139*
6. *वहीं– पृ0 96*
7. *वहीं– पृ0 99*
8. *वहीं– पृ0 104*

9. वहीं– पृ0 110
10. वहीं– पृ0 133
11. वहीं– पृ0 108
12. वहीं– पृ0 108
13. वहीं– पृ0 109
14. वहीं– पृ0 110
15. वहीं– पृ0 209
16. वहीं– पृ0 173
17. वहीं– पृ0 188
18. वहीं– पृ0 188
19. हिन्दी साहित्य के कुछ नारी पात्र : डॉ0 माधुरी दूबे पृ0 6
20. वहीं– पृ0 206
21. गोदान– पृ0 300
22. वहीं– पृ0 300